ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 14 अंक 31 कुल पृष्ठ-8 23 से 29 मई, 2019 दयानन्दाब्द 194 सृष्टि सम्वत् 1960853120 सम्वत् 2076 ज्ये. कृ.-03

आर्य समाज सागरपुर, दिल्ली के संस्थापक एवं आर्य समाज के प्रतिष्ठित कार्यकर्ता डॉ. दयानन्द आर्य की श्रद्धांजलि सभा में उमड़ी आर्यजनों की भीड़

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी एवं गुरुकुल गौतमनगर के आचार्य स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी श्रद्धांजलि सभा में हुए सम्मिलित

आर्य पुरोहित सभा दिल्ली के प्रधान आचार्य प्रेमपाल शास्त्री ने किया मंच संचालन

श्री अभयदेव शास्त्री, पं. मेघश्याम वेदालंकार, श्री शिवराज सिंह शास्त्री, आचार्य नरेन्द्र शास्त्री व श्री हरि सिंह आर्य, आदि विद्वानों ने अर्पित की भावभीनी श्रद्धांजलि

आर्य समाज सागरपुर, नई दिल्ली के संस्थापक एवं कृषि वैज्ञानिक डॉ. दयानन्द आर्य जी का गत दिनों लम्बी बीमारी के बाद देहावसान हो गया। उनकी स्मृति में 22 मई, 2019 को आर्य समाज, सागरपुर, नई दिल्ली में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। श्रद्धांजलि सभा में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, दर्जनों गुरुकुलों के संस्थापक श्रीमद्दयानन्द आर्ष गुरुकुल परिषद् के अध्यक्ष स्वामी प्रणवानन्द जी महाराज के अतिरिक्त आर्य पुरोहित सभा दिल्ली के प्रधान तथा सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, श्री अभयदेव शास्त्री, श्री मेघश्याम वेदालंकार, श्री शिवराज सिंह शास्त्री, आचार्य नरेन्द्र शास्त्री, श्री हरिसिंह आर्य, क्षेत्र की निगम पार्षद् श्रीमती पूनम जिन्दल, नजफगढ़ जोन के चेयरमैंन श्री मुकेश सूर्यान, डाबड़ी वार्ड की निगम पार्षद सुश्री रेखा विनय चौहान, द्वारका विधानसभा के पूर्व विधायक श्री प्रद्युम्न राजपूत, श्री विनय मिश्रा (श्री महाबल मिश्रा के सुपुत्र), राजपूत सभा दिल्ली के प्रदेश अध्यक्ष श्री कृपानाथ सिंह, पूर्व निगम पार्षद् श्री प्रवीण राजपूत, श्री गजेन्द्र राजपूत, आर.डब्ल्यू. के प्रधान श्री रामकुमार चौधरी और समस्त पदाधिकारी, आर्य समाज इन्द्रा पार्क और आर्य समाज नागलराय इन्द्रा पार्क के पदाधिकारीगण, आर्य समाज सागरपुर के समस्त पदाधिकारीगण, आर्य समाज देवनगर दिल्ली के प्रधान श्री सुशील बाली, भाजपा नजफगढ़ जिला के महामंत्री श्री कृष्ण गोदारा, द्वारका कोर्ट बॉर एसोसिएशन के प्रधान श्री वाई.पी. सिंह आदि विद्वानों तथा गणमान्य महानुभावों ने डॉ. दयानन्द आर्य को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। श्रद्धांजलि सभा का संचालन आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी ने किया। श्रद्धांजलि सभा से पूर्व शांति यज्ञ आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य अभयदेव शास्त्री जी ने सम्पन्न किया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने विचार प्रकट करते हुए डॉ. दयानन्द आर्य के निधन को आर्य समाज की अपूर्णीय क्षति बताया। उन्होंने कहा कि डॉ. दयानन्द आर्य जी सार्वदेशिक सभा के प्रतिष्ठित सदस्य थे तथा वे सदैव सभा के कार्यों में अपना सक्रिय सहयोग प्रदान करते रहते थे। उन्होंने कहा कि डॉ. दयानन्द आर्य एक साहसी एवं धैर्यवान व्यक्तित्व के धनी थे और विपरीत परिस्थितियों में भी वे सदैव बहादुरी के साथ संघर्ष करके अपना मार्ग प्रशस्त किया करते थे। उन्होंने सागरपुर आर्य समाज की स्थापना एवं निर्माण में अपना महत्त्वपूर्ण योदान किया था। वर्षों तक वे आर्य समाज सागरपुर के प्रधान रहे और अनेक लोगों को आर्य समाज से जोड़ने का महत्त्वपूर्ण कार्य उन्होंने किया। आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रति उनकी निष्ठा इतनी प्रगाढ़ थी कि वे सदैव अपने बच्चों को आर्य समाज से जोड़ने के लिए प्रयत्नशील रहते थे। सन् 2010 में दक्षिण अफ्रीका में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में उन्होंने अपने सुपुत्र श्री पवन आर्य, पुत्रवधु प्रीति जी और अपने पौत्र आर्यमन को भाग लेने के लिए भेजा। स्वामी आर्यवेश जी ने

शेष पृष्ठ 4 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

ग्रीष्म कालीन छुट्टियों में सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में आयोजित आर्य युवा निर्माण शिविरों का विवरण

1. **राष्ट्रीय आर्य कार्यकर्ता कैप्सूल शिविर**
   दिनांक 20 से 28 जून, 2019
2. **प्रान्तीय युवा चरित्र निर्माण शिविर, हरियाणा**
   दिनांक 1 से 5 जून, 2019
   स्थान – स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली
   संयोजक– ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, मो.–9354840454
3. **राष्ट्रीय कन्या चरित्र निर्माण एवं योग शिविर**
   दिनांक 6 से 12 जून, 2019
   स्थान – स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली
   संयोजक – प्रवेश आर्या, मो.:–9416630916
4. **कन्या चरित्र निर्माण एवं योग शिविर**
   10 से 16 मई, 2019
   स्थान–श्री विनायक शोध व प्रशिक्षण संस्थान,
   नायला, जयपुर, राजस्थान
   संयोजक– श्री यशपाल 'यश', मो.–9414360248
5. **आर्य युवा निर्माण शिविर जयपुर**
   14 से 20 जून, 2019 तक
   स्थान–संस्कार भवन, जी. एल. सैनी कालेज
   केसरनगर चौराहा, रामपुरा रोड, जयपुर
   संयोजक– श्री यशपाल 'यश', मो.–9414360248
6. **आर्य युवा निर्माण शिविर पलवल**
   आर्य समाज जवाहरनगर, पलवल, हरियाणा
   संयोजक–स्वामी श्रद्धानन्द, मो.–9416267482
7. **आर्य कन्या चरित्र निर्माण व योग शिविर**
   22 से 28 मई, 2019
   आर्य कन्या पाठशाला, खुर्जा, बुलन्दशहर, उ. प्र.
8. **आर्य युवा निर्माण शिविर मध्य प्रदेश**
   29 मई से 2 जून, 2019
   स्थान–सिहोर, मध्य प्रदेश
   सम्पर्क–डॉ. लक्ष्मणदास आर्य, मो.–9425133481
9. **आर्य युवा निर्माण एवं बौद्धिक शिविर चम्बा**
   2 से 5 मई, 2019
   स्थान–दयानन्द मठ चम्बा, हिमाचल प्रदेश
10. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    गावँ जाजवान, जिला जींद
    20 मई से 26 मई 2019
    संयोजकः– राजपाल आर्य
11. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    आर्य स्कूल, गंगाना, सोनीपत
    22 से 29 मई 2019
    संयोजकः– बलराम आर्य
12. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
    बिसवां मील, सोनीपत
    23 से 30 मई 2019
    संयोजकः– आचार्य प्रवीण आर्य
13. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    दून वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सोनीपत
    7 से 13 जून 2019
    संयोजकः– अंकित आर्य
14. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    एम डी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, राजौंद,कैथल
    22 से 28 मई 2019
    संयोजकः– डॉ होशियार सिंह आर्य
15. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    जाट स्कूल, कैथल
    25 से 30 मई 2019
    संयोजकः– सत्यवीर आर्य
16. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    गावँ मांडौली खुर्द, जिला भिवानी
    21 से 27 मई 2019
    संयोजकः– अशोक आर्य
17. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    गावँ मांडौली कलां, जिला भिवानी
    21 से 27 मई 2019
    संयोजकः– अशोक आर्य
18. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    गावँ चहड़ कलां, जिला भिवानी
    25 से 31 मई 2019
    संयोजकः– अशोक आर्य

11 जून से 19 जून 2019 के मध्य भिवानी जिले में आयोजित होने वाले शिविर

19. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    गावँ बहल, जिला भिवानी
    संयोजकः– अशोक आर्य
20. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    गावँ सुरपुरा कलां, जिला भिवानी
    संयोजकः– अशोक आर्य
21. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    गावँ गौकुलपुरा, जिला भिवानी
    संयोजकः– अशोक आर्य
22. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    गावँ जुई कलां, जिला भिवानी
    संयोजकः– बाबू लाल आर्य

जींद जिले में 6 जून 19 जून के मध्य आयोजित होने वाले शिविर

23. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    स्वामी इन्द्रवेश व्यायामशाला
    गावँ खटकड़, जिला जींद
    संयोजकः– अशोक आर्य, सोनू आर्य
24. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    गावँ गोइयाँ, जिला जींद
    संयोजकः– धर्मबीर आर्य सरपंच
25. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    गावँ चांदपुर, जिला जींद
    संयोजकः– मनीष नरवाल
26. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    गावँ छातर जिला जींद
    संयोजकः– सूरजमल आर्य पहलवान
27. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    गावँ घोघड़ियाँ, जिला जींद
    संयोजकः– जगफुल ढिल्लों
28. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    गावँ बहलबा, जिला रोहतक़
    संयोजकः डॉ सीसराम आर्य
29. **युवा चरित्र निर्माण शिविर**
    गावँ फरमाना, जिला रोहतक़
    संयोजकः डॉ राजेश आर्य
30. **राष्ट्रीय युवा संकल्प समारोह**
    (युवाओं के प्रेरणा स्रोत स्वामी इन्द्रवेश जी की 13वीं पुण्य स्मृति के अवसर पर)
    12 जून, 2019, प्रातः 9 बजे से मध्यान्ह 2 बजे तक
    स्थान – स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली

वैदिक त्रैतवाद

– डॉ. सोमदेव शास्त्री

प्रत्येक वस्तु का कोई बनाने वाला (निर्माता) होता है तथा जिस पदार्थ से वह वस्तु बनती है वह पदार्थ भी होता है और जिसके लिए वह वस्तु बनाई गई है उस वस्तु का उपयोग करने वाला भी अवश्य होता है। इन तीनों के बिना वस्तु का निर्माण नहीं हो सकता और न ही उसकी उपयोगिता सिद्ध हो सकती है।

जैसे घड़े को बनाने वाला (निर्माता) कुम्हार होता है तथा मिट्टी से घड़ा बनता है और मिट्टी के घड़े का उपयोग करने वाला घड़े में पानी भरने वाला, घड़े के पानी को पीने वाला व्यक्ति भी होता है। यदि तीनों में से कोई एक भी न हो तो घड़ा नहीं बन सकता और उसकी उपयोगिता भी सिद्ध नहीं हो सकती है। जैसे घड़े को बनाने वाला कुम्हार हो और यदि मिट्टी न हो तो घड़ा नहीं बन सकता है और यदि मिट्टी हो और घड़ा बनाने वाला कुम्हार न हो तब भी घड़ा नहीं बन सकता है। यदि घड़ा बनाने वाला कुम्हार और मिट्टी दोनों ही हों तब घड़ा तो बन जाता है किन्तु यदि घड़े का उपयोग करने वाला, घड़े को काम में लेने वाला न हो तो घड़े का निर्माण निरर्थक है। इसलिए घड़े को बनाने वाले के साथ घड़े का उपयोग करने वाले का होना भी आवश्यक है तथा जिस मिट्टी से घड़ा बनता है उसका होना भी आवश्यक है, ये तीनों ही घड़े के निर्माण में आवश्यक हैं इन सबका

अपना महत्त्व है। इसी प्रकार भोजन, वस्त्र, मकानादि प्रत्येक पदार्थ में बनाने वाला, जिससे भोजन वस्त्रादि बनते हैं वह पदार्थ तथा जिसके लिए बनाया जाता है वह ये तीनों ही होते हैं। इन तीनों को शास्त्रीय भाषा में निमित्त कारण, उपादान कारण और साधारण कारण कहते हैं। घड़ा बनाने वाले कुम्हार को घड़े का निमित्त कारण कहते हैं तथा जिस मिट्टी से घड़ा बनता है वह मिट्टी घड़े के उपादान का कारण है और जिसके लिए घड़ा बना है वह साधारण कारण कहलाता है।

इसी प्रकार इस सृष्टि को बनाने वाला परमेश्वर है, जिससे यह सृष्टि बनी है वह प्रकृति कहलाती है और जिसके लिए सृष्टि का निर्माण परमेश्वर ने किया है उसे जीवात्मा कहते हैं। इस सृष्टि में इन तीनों का होना आवश्यक और महत्त्वपूर्ण है। यदि इन तीनों में से कोई एक भी न हो तो यह सृष्टि नहीं बन सकती है। यदि सृष्टि का बनाने वाला परमेश्वर ही हो और जिससे वह सृष्टि का निर्माण करता है वह प्रकृति न हो तो परमेश्वर सृष्टि नहीं बना सकता है और यदि प्रकृति ही हो और इसका बनाने वाला ईश्वर न हो तब भी सृष्टि अपने आप नहीं बन सकती है। क्योंकि जड़ पदार्थ में अपने आप क्रिया नहीं होती है। बिना कुम्हार के मिट्टी से घड़ा अपने आप स्वयं नहीं बनता है। वैसे ही जड़ प्रकृति से सृष्टि अपने आप नहीं बनती है। यदि ईश्वर और प्रकृति दोनों ही हों और जिसके लिए सृष्टि का निर्माण होता है वह जीवात्मा न हो तब भी सृष्टि की कोई उपयोगिता नहीं होती है। यदि जीवात्मा न हो तो सृष्टि का निर्माण परमेश्वर किसके लिए करता है, उसका सृष्टि निर्माण करना निरर्थक होगा। इसलिए सृष्टि के निर्माण में जीवात्मा का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है।

ये तीनों ही आवश्यक हैं, इन तीनों के अनिवार्यता की दृष्टि से ही उनके लिए ''त्रैतवाद'' शब्द का प्रयोग किया जाता है। वेद में इन तीनों के अस्तित्त्व उपयोगिता और अनिवार्यता का स्पष्ट वर्णन किया गया है।

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्ष परिषस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्यनश्नन्नन्योभिचाकशीति।।
ऋग्वेद-1/164/2

अर्थात् ***ईश्वर और जीव दोनों चेतन और अनादि हैं तथा तीसरा अनादि कारण प्रकृति है। प्रकृति से बने हुए संसार रूपी वृक्ष का फल जीवात्मा भोग रहा है, तथा परमेश्वर इसका फल न खाता हुआ चारों ओर देख रहा है। अर्थात् सृष्टि का निर्माण परमेश्वर ने अपने लिए नहीं जीवात्मा के लिए किया है वही इस सृष्टि में कर्म करता और उनका फल भोगता है।***

महाभारत के युद्ध के पश्चात् वेदादि शास्त्रों के विपरीत अनेक विचारधारा प्रारम्भ हो गई। उन्हीं विचारधाराओं में ''वैदिक त्रैतवाद'' के स्थान पर द्वैतवाद-अद्वैतवाद विशिष्टाद्वैतवादादि विचारधाराओं का प्रचलन प्रारम्भ हुआ और जन सामान्य वैदिक त्रैतवाद के महत्त्व को भूल गया है। जड़ (प्रकृति) और चेतन (पुरुष) ये दोनों पृथक तत्व हैं जिनके परस्पर सहयोग से संसार बनता है। निमित्त (ईश्वर) और उपादान (प्रकृति) दोनों के द्वारा जीवात्मा के लिए सृष्टि की रचना होती है। इसके स्थान पर यह विचारधारा प्रारम्भ हो गई कि इस सृष्टि का निर्माता निमित्त कारण परमेश्वर नहीं है। जड़ प्रकृति से ही सृष्टि अपने आप बन गई है। जड़ पदार्थों के परस्पर मिलने से अवस्था विशेष में चेतनता आ जाती है। जैसे दही और गोबर के मिलने से बिच्छू पैदा हो जाता है। वैसे ही पंच स्थूल भूतों-पृथ्वी-जल-अग्नि-वायु और आकाश के विशेष सहयोग होने पर चेतन जीवात्मा बन जाता है। अर्थात् ''जड़ से ही चेतन बन जाता है'' यह विचारधारा प्रारम्भ हो गई। जिसे चारवाक्, जैन बौद्धादि सम्प्रदायों ने प्रचारित किया। आधुनिक भौतिकवादी भी इसी प्रकार मानते हैं कि कुछ प्राकृतिक द्रव्यों के मिश्रण से प्रोटोप्लाज्म (जीवन) प्रारम्भ हो जाता है।

इस विचारधारा के ठीक विपरीत शंकराचार्य ने घोषणा की कि चेतन (ब्रह्म) से ही जड़ जगत् पैदा हुआ है। ''एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति'' का उद्घोष किया, उनकी विचारधारा को ''अद्वैतवाद'' के नाम से जाना जाता है। उन्होंने अपनी मान्यता को स्थापित करने के लिए उदाहरण दिए हैं। केवल ब्रह्म ही जगत् का निमित्त और उपादान कारण है इसके लिए ब्रह्म से अतिरिक्त प्रकृति के मानने की कोई आवश्यकता नहीं है। जैसे मकड़ी अपने अन्दर से ही जाला बनाती है वैसे ही चेतन ब्रह्म (परमेश्वर) ने अपने द्वारा ही यह संसार रूपी जाला बनाया है।

किन्तु मकड़ी के जाले का गहन चिन्तन करने से स्पष्ट होता है कि मकड़ी का शरीर मकड़ी के शरीर के अन्दर रहने वाला जीवात्मा ये दोनों मिलकर जाले को बनाते हैं। मरी हुई मकड़ी जाला नहीं बना सकती। इसी प्रकार बिना शरीर के केवल जीवात्मा भी जाला नहीं बना सकता है। इस उदाहरण से भी वैदिक त्रैतवाद की मान्यता ही पुष्ट होती है कि अकेला चेतन ब्रह्म परमेश्वर सृष्टि की रचना नहीं कर सकता है और अकेली प्रकृति जड़ भी सृष्टि की रचना नहीं कर सकती है अपितु चेतन और जड़ के सहयोग से निमित्त और उपादान कारण से जगत् की रचना होती है।

यदि चेतन ब्रह्म ही जगत् का (उपादान) कारण है तो सामान्य नियम है कि जो गुण (उपादान) कारण से होते हैं वे ही गुण उससे बने हुए कार्य पदार्थ में भी रहते हैं। जैसे मिट्टी के गुण मिट्टी के बने हुए घड़े में रहते हैं। वैसे चेतन ब्रह्म से जड़ जगत् कैसे बन गया। चेतन से जड़ता कैसे आ गई?ब्रह्म तो आनन्द स्वरूप है परन्तु इससे बने हुए संसार में दुःख क्यों है, यह प्रश्न जब अद्वैतवादी के समक्ष रखा जाता है तब सिद्ध करने के लिए श्री शंकराचार्य ने अपने शब्दों की रचना की और अपने ढंग से इनका अर्थ किया। वे कहते हैं कि एक परिणाम होता है और एक विवर्त होता है दूध को जमाने पर दही बनता है। दही दूध का परिणाम है। अंधेरे में पड़ी हुई रस्सी को मनुष्य प्रकाश पूरी तरह से न होने के कारण सांप समझता है और भयभीत होने लगता है। अंधेरे में पड़ी हुई रस्सी को सर्प समझना ''विवर्त'' कहलाता है। रस्सी वास्तव में सांप नहीं है किन्तु भ्रम के कारण मनुष्य उसे सर्प समझता है, ठीक इसी प्रकार मनुष्य जिस जगत् को जड़ कहता है, प्रत्येक मनुष्य पृथक-पृथक् अपनी सत्ता स्वीकार करता है यह सब विवर्त है, भ्रम है। वास्तव में केवल ब्रह्म की ही सत्ता है और सारा संसार मिथ्या है। यह उनका प्रसिद्ध वाक्य है - ''ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या'' अर्थात् ब्रह्म की सत्ता वास्तविक रूप में है, चेतन ब्रह्म का ही अस्तित्व है और सारा संसार मिथ्या - झूठा है, भ्रम है। संसार मिथ्या क्यों है?इसका समाधान करते हुए कहते हैं कि जैसे स्वप्न में मनुष्य देखता है कि अपना भाई या पुत्र पास में खड़ा है किन्तु जैसे ही आँख खुलती है तो भाई या पुत्र पास में खड़ा नहीं दिखता है अर्थात् स्वप्न में देखी हुई वस्तुओं का अस्तित्व नहीं होता है वैसे ही संसार का वास्तविक रूप में

ईश्वर और जीव दोनों चेतन और अनादि हैं तथा तीसरा अनादि कारण प्रकृति है। प्रकृति से बने हुए संसार रूपी वृक्ष का फल जीवात्मा भोग रहा है, तथा परमेश्वर इसका फल न खाता हुआ चारों ओर देख रहा है। अर्थात् सृष्टि का निर्माण परमेश्वर ने अपने लिए नहीं जीवात्मा के लिए किया है वही इस सृष्टि में कर्म करता और उनका फल भोगता है।

अस्तित्व नहीं है। यह सब स्वप्न के समान भ्रम या मिथ्या झूठा है। जिस विवर्त शब्द की कल्पना करके रस्सी को सांप समझने का उदाहरण देकर शंकराचार्य और उनके अनुयायी अद्वैतवादी यह सिद्ध करने का प्रयास करते हैं कि जैसे सांप की सत्ता नहीं है वैसे ही जगत् का अस्तित्व नहीं है किन्तु उनके दिए हुए उदाहरण से ही स्पष्ट होता है कि सांप का अस्तित्व होता है उसकी सत्ता होती है इसलिए टेढ़ी-मेढ़ी रस्सी को देखकर टेढ़े-मेढ़े सांप का भ्रम होता है। अंधेरे में पड़ी हुई रस्सी को देखकर टेबल-कुर्सी या छाते का भ्रम नहीं होता अपितु सांप का ही होता है क्योंकि रस्सी और सांप के टेढ़ेपन की समानता है। यदि कहीं पर भी सांप का अस्तित्व न होता और यदि मनुष्य ने सांप न देखा होता तो कभी भी उसे सांप का भ्रम न होता। रस्सी में सांप के भ्रम होने से ही सिद्ध होता है कि सांप की सत्ता है। इसी प्रकार विवर्त शब्द की कल्पना करके जिस जगत् को मिथ्या सिद्ध करने वाले अद्वैतवादियों को जगत् की यथार्थता, इसका अस्तित्व, इसकी सत्ता अवश्य ही माननी पड़ेगी। भले अपने मनस्तुष्टि के लिए इस जगत् को मिथ्या कहें किन्तु दूसरी जगह तो जगत् का अस्तित्व स्वीकार करना ही पड़ेगा जिससे उस यथार्थ जगत् के आधार पर इस जगत् को मिथ्या कहने का दुःसाहस करते हैं।

स्वप्न का उदाहरण देकर भी लोगों को भ्रमित किया जाता है।

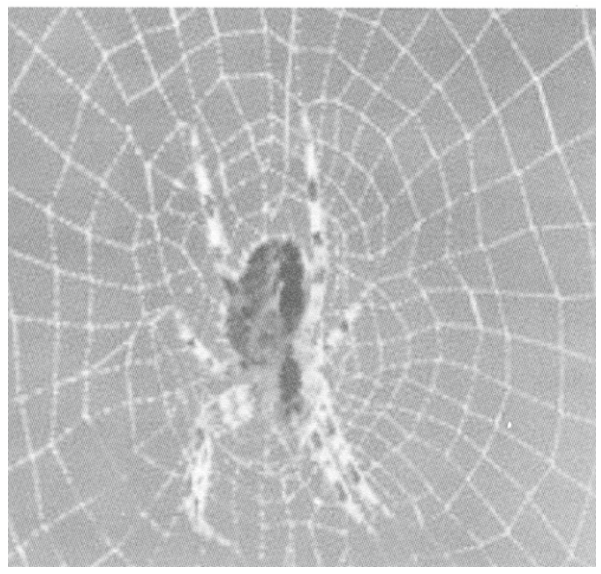

जब कि वास्तविकता यह है कि जागृत अवस्था के अनुसार स्वप्न अवस्था होती है। जागते हुए मनुष्य जो देखता सुनता है वे ही वस्तुएं स्वप्न में देखता है। जो व्यक्ति जन्म से अन्धा होता है जिसने कभी भी किसी भी पदार्थ को नहीं देखा उसे स्वप्न में भी कोई वस्तु नहीं दीखती है। इससे स्पष्ट है कि जागृत अवस्था के अनुसार स्वप्न है, न कि स्वप्न अवस्था के अनुसार जागृत अवस्था। जागृत अवस्था में व्यक्ति के पास उसका भाई या पुत्र अनेकों बार खड़ा रहता है वे ही संस्कार स्वप्नावस्था में सक्रिय हो जाते हैं और स्वप्न में भी वैसा ही दीखने लगता है। इस विवेचन से भी यह स्पष्ट होता है कि स्वप्न में जो चीजें दिखाई देती हैं वे जागृत अवस्था में अवश्य होती है। यह वर्तमान संसार स्वप्न के समान मिथ्या है तो, जागृत अवस्था के समान कहीं अवश्य ही यर्थाथ संसार मानना पड़ेगा जिसके संस्कार इस वर्तमान संसार में स्वप्न के समान प्रतीत हो रहे हैं। अर्थात् कहीं न कहीं तो संसार की यथार्थता को स्वीकार करना ही पड़ेगा। जैसे बिना सांप की सत्ता को स्वीकार किये उसका भ्रम नहीं हो सकता है। वस्तुतः संसार मिथ्या नहीं है, अस्थिर है, नित्य नहीं है अनित्य है

शेष पृष्ठ 7 पर

आर्य समाज के महान त्यागी, तपस्वी, संन्यासी, युवाओं के प्रेरणास्रोत पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज की 13 वीं पुण्यतिथि के अवसर पर

दिनांक : 12 जून (बुधवार), 2019 को राष्ट्रीय युवा संकल्प समारोह

स्थान – स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, टिटौली, जिला–रोहतक, हरियाणा में आयोजित

अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर कार्यक्रम को सफल बनायें

विशेष नोट – इस अवसर पर प्रतिवर्ष की भांति राष्ट्रीय कन्या चरित्र निर्माण एवं योग प्रशिक्षण समारोह का समापन एवं आर्य जगत् के दो विद्वानों, एक भजनोपदेशक, एक संन्यासी, चार युवक कार्यकर्ता एवं चार महिला कार्यकर्ताओं को स्वामी इन्द्रवेश स्मृति सम्मान से सम्मानित किया जायेगा। सम्मानित किये जाने वाले महानुभावों को स्वामी इन्द्रवेश फाउण्डेशन की ओर से स्मृति चिन्ह, प्रशस्ति पत्र, श्रीफल, शॉल एवं धनराशि प्रदान की जायेगी। स्वामी इन्द्रवेश जी ने जीवनभर आर्य जगत के संन्यासियों, विद्वानों, उपदेशकों, भजनोपदेशकों, पुरोहितों एवं कार्यकर्ताओं को सम्मान देने की परम्परा को न केवल प्रचलित किया बल्कि इसको अत्यन्त श्रद्धा और सम्मान के साथ आगे भी बढ़ाया। वे सदैव उपरोक्त विद्वत्जनों की प्रतिष्ठा एवं सम्मान के लिए आगे बढ़कर योगदान देते थे। उसी परम्परा का निर्वहन करते हुए उनकी स्मृति में प्रतिवर्ष यह सम्मान समारोह एवं युवक तथा युवतियों को आर्य सिद्धान्तों के प्रति जागरूक करके संकल्प दिलवाने के लिए संकल्प समारोह का भव्य आयोजन किया जाता है। आप सभी से प्रार्थना है कि आप भी इस अत्यन्त महत्त्वाकांक्षी एवं आकर्षक कार्यक्रम के साक्षी बनें और स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज के जीवन से प्रेरणा लेकर अपने जीवन को आर्य समाज एवं राष्ट्र की सेवा में लगाने का संकल्प लें।

– स्वामी आर्यवेश, अध्यक्ष स्वामी इन्द्रवेश फाउण्डेशन

पृष्ठ 1 का शेष

आर्य समाज सागरपुर, दिल्ली के संस्थापक एवं आर्य समाज के प्रतिष्ठित कार्यकर्ता डॉ. दयानन्द आर्य की श्रद्धांजलि सभा में उमड़ी आर्यजनों की भीड़

स्व. डॉ. दयानन्द आर्य को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए शोक संतप्त परिवार के प्रति अपनी सांत्वना प्रदान की। उन्होंने दिवंगत आत्मा की शांति एवं सद्गति तथा शोक संतप्त परिवार को इस दुःख को सहन करने का साहस प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की।

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि डॉ. दयानन्द आर्य जी आर्य सिद्धान्तों के प्रति समर्पित थे। हमें उनके देहावसान पर उनके जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। स्वामी जी ने कहा कि मृत्यु एक शाश्वत सत्य है। अतः हमें मृत्यु का शोक नहीं करना चाहिए अपितु दिवंगत आत्मा के सद्कार्यों से प्रेरणा लेकर अपने जीवन को आगे बढ़ाना चाहिए। स्वामी जी ने डॉ. दयानन्द जी को आर्य समाज का एक मजबूत स्तम्भ बताया जिसके गिर जाने से निःसंदेह आर्य समाज की बहुत बड़ी क्षति हुई। उन्होंने कहा कि आर्य समाज के कई प्रतिष्ठित नेता एवं कार्यकर्ता गत एक वर्ष में दिवंग हो चुके। अतः आवश्यकता है नये निष्ठावान कार्यकर्ता तैयार करने की और डॉ. दयानन्द आर्य जी सदैव इसी कार्य में लगे रहते हैं। मैं गुरुकुल परिवार की तरफ से उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ और शोक संतप्त परिवार के लिए सांत्वना व्यक्त करता हूँ।

इस अवसर पर प्रसिद्ध विद्वान् डॉ. मेघश्याम वेदालंकार ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि डॉ. दयानन्द भारतीय संस्कृति, सदाचार, संस्कार तथा विश्व बन्धुत्व का भाव लेकर जीवन में अग्रसर रहे। वो अत्यन्त निष्ठावान व्यक्ति थे तथा आर्य समाज के कार्यों में निरन्तर संलग्न रहते थे।

श्री अभयदेव शास्त्री ने कहा कि डॉ. दयानन्द आर्य महर्षि दयानन्द जी के अनन्य भक्त थे और उन्होंने अपने परिश्रम से वो सब कर दिखाया जो एक कर्मयोगी ही कर सकता है। वे अपने जीवन के स्वयं निर्माता थे, उन्होंने आर्य समाज तथा वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार के लिए अत्यन्त उत्साह के साथ कार्य किया।

इस अवसर पर श्री शिवराज शास्त्री ने अपनी श्रद्धांजलि व्यक्त करते हुए कहा कि डॉ. दयानन्द समाज सुधार के प्रतीक थे। उनका जीवन समाजसेवा के प्रति समर्पित था। सामाजिक गतिविधियों में वे निरन्तर लगे रहते थे। वे सदैव धर्म के मार्ग पर चले और उनका जीवन अनुकरणीय रहा। हम सबको उनके व्यक्तित्व से प्रेरणा लेनी चाहिए।

आर्य समाज देवनगर, दिल्ली के प्रधान श्री सुशील बाली ने अपने श्रद्धा सुमन व्यक्त करते हुए डॉ. दयानन्द आर्य को एक कर्मयोगी बताया। उन्होंने कहा कि वे जीवन पर्यन्त आर्य समाज को उन्नत करने में लगे रहे। उन्होंने आर्य समाज सागरपुर की जो सेवा की है वह अनुकरणीय है। उन्होंने आर्य समाज में नये लोगों को लाने के लिए विशेष प्रयास किये। भगवान उस पवित्र आत्मा को अपने चरणों में स्थान दें।

अन्त में डॉ. दयानन्द आर्य के सुपुत्र श्री पवन आर्य ने श्रद्धांजलि सभा में सम्मिलित हुए सभी आगन्तुक महानुभावों, आर्य संन्यासियों तथा विद्वानों का अपने परिवार के प्रति इस दुःख की घड़ी में सांत्वना प्रदान करने के लिए आभार व्यक्त किया।

स्वामी इन्द्रवेश स्मृति सम्मान समारोह एवं युवा संकल्प कार्यक्रम

स्वामी दयानन्द सरस्वती

दिनांक 12 जून, 2019 (बुधवार), प्रातः 9 बजे से
स्थान : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम) टिटौली, रोहतक (हरि.)

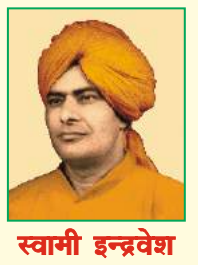

स्वामी इन्द्रवेश

स्वामी इन्द्रवेश स्मृति विरक्त सम्मान

स्वामी श्रद्धानन्द जी सरस्वती (पलवल)

स्वामी इन्द्रवेश स्मृति विद्वत् सम्मान

डॉ. बलबीर आचार्य (रोहतक)
डॉ. नरेन्द्र वेदालंकार (दिल्ली)

स्वामी इन्द्रवेश स्मृति भजनोपदेशक सम्मान

श्री रामरख आर्य (गुजरानी)

स्वामी इन्द्रवेश स्मृति आर्य युवा सम्मान

श्री नारायण सिंह आर्य (राजस्थान), श्री विनोद आर्य (राजस्थान)
श्री राजेश आर्य (फरमाणा), श्री गुलाब सिंह आर्य (उत्तर प्रदेश)

स्वामी इन्द्रवेश स्मृति आर्य वीरांगना सम्मान

सुश्री शशि आर्या (रोहतक),
श्रीमती बिमला चौधरी (चिड़ावा)
श्रीमती रेखा सैनी (हिसार),
सुश्री मुकेश आर्या (भिवानी)

स्वामी इन्द्रवेश स्मृति सक्रिय आर्य कार्यकर्ता सम्मान

श्री राजकुमार आर्य, (चंडीगढ़), श्री हरिकेश रावीश एडवोकेट (कैथल), श्री अमित गुप्ता (कैथल), श्री श्यामलाल आर्य (कैथल), श्री अजीत पाल, (जींद), श्री बलवंत सिंह आर्य (सीसर), श्री कृष्ण कुमार बब्बर (हांसी), श्री इंद्र सिंह आर्य (भिवानी), प्रि. ओमप्रकाश (बौन्द), श्री सत्यवीर (फरमाना)।

आयोजक
स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम) टिटौली, रोहतक (हरि.)

'वेदों में अग्निहोत्र का विधान इसका ईश्वरप्रोक्त होने का प्रमाण'

– मनमोहन कुमार आर्य

वेदों का आविर्भाव सृष्टि के आरम्भ में हुआ था। अन्य सभी मत–मतान्तर विगत लगभग 2500 वर्ष व उसके बाद प्रचलित हुए हैं। मत–मतान्तरों के आविर्भाव पर जब हम विचार करते हैं तो उसका कारण अविद्या सिद्ध होता है। महाभारत काल के बाद समस्त संसार में ज्ञान–विज्ञान का लोप होकर अविद्या तिमिर का प्रसार हुआ जिससे लोग अवैदिक व अज्ञानपूर्ण कार्य करने लगे। अविद्या के कारण अन्धविश्वास बढ़ते गये जिससे मनुष्य को सामान्य जीवन व्यतीत करने में असुविधा होने लगी। इस समस्या के समाधान के लिये तत्कालीन पुरुषों, चिन्तक व विचारकों ने अपनी–अपनी मति व बुद्धि के अनुसार उनको उपलब्ध ज्ञान का प्रचार करने का प्रयास किया जिसने बाद में मत–मतान्तर का रूप ग्रहण कर लिया। सभी मतों की पुस्तकों की परीक्षा करने पर एक सामान्य बात दृष्टिगोचर होती है कि वेद व ऋषियों के ग्रन्थों के अतिरिक्त महाभारत काल के बाद ऐसा कोई मत उत्पन्न नहीं हुआ जिसमें अविद्या न हो। यदि इन मतों में अविद्या न होती तो किसी को भी कोई कष्ट व परेशानी न होती। अविद्या के कारण ही इन मतों व इनसे भिन्न मतों के मानने वालों के बीच समस्यायें उत्पन्न होती गईं। लोगों को इन समस्याओं का मूल कारण पता नहीं चला। नये–नये लोग उत्पन्न होते गये और नये–नये मतों का प्रचलन होता रहा। कुछ मतों में कट्टरता के कारण उनमें अधिक मतों व उनकी अधिक शाखाओं का आविर्भाव वा प्रचलन नहीं हुआ तथापि सभी मतों की कुछ शाखायें अविद्या व अन्य कारणों से उत्पन्न हुईं और आज तक ज्ञान व विज्ञान की वृद्धि होने पर भी उनमें परस्पर सौहार्द व मेलजोल स्थापित नहीं हो सका है। महाभारत के बाद जो मत अस्तित्व में आये, उनमें से किसी में अग्निहोत्र देव–यज्ञ का विधान व उल्लेख नहीं है। इसका कारण उन मतों का मनुष्यों से उत्पन्न होना जो स्वभाव व प्रकृति से अल्पज्ञ होते हैं, होना है। अल्पज्ञ का अर्थ एकदेशी आत्मा होता है जो सर्वव्यापक सर्वज्ञ परमात्मा के समान निर्भ्रान्त ज्ञान को कदापि प्राप्त नहीं हो सकता। ईश्वर भी इस व्यवस्था को बदल नहीं सकता है। यह भी तथ्य है कि ईश्वर सृष्टि के आरम्भ में एक ही बार चार ऋषियों को उत्पन्न कर उन्हें एक–एक वेद का ज्ञान देता है। उसके बाद प्रलय पर्यन्त वह किसी मनुष्य या विद्वान को ज्ञान नहीं देता।

अग्निहोत्र करने की आज्ञा वेदों में की गई है। वेद परम पिता ईश्वर का ज्ञान है। मनुष्यों का यह सामर्थ्य नहीं कि वह वेदों की रचना कर सकें। मनुष्य अनेक प्रकार की रचनायें करने में समर्थ है। उसने कम्प्यूटर, वायुयान, रेलगाड़ी, बडे–बड़े भवन, जलयान, मोबाइल फोन, टीवी आदि नाना प्रकार के जटिल कार्यों को करके दिखाया है। इतना होने पर भी मनुष्य वा वैज्ञानिक मनुष्य की आंख, नाक, कान, अंगुली, इन्द्रियां, मन व बुद्धि आदि मानव शरीर के अंग–प्रत्यंगों को कभी नहीं बना सकते। इसी प्रकार वेद ज्ञान की उत्पत्ति भी मनुष्य कदापि नहीं कर सकते। मनुष्यों ने अनेक मत चलायें हैं परन्तु वह सभी अविद्या से युक्त हैं और विष सम्पृक्त अन्न के समान त्याज्य हैं। परमात्मा की कृति निर्दोष होती है। वेद में कही सभी बातें वा मान्यतायें सत्य एवं सृष्टि क्रम सहित विज्ञान के भी अनुकूल हैं। इससे यह सिद्ध हो जाता है कि सृष्टि के आरम्भ में परमात्मा ने ज्ञान दिया था। वेद वही ज्ञान है। वेदों में अग्निहोत्र की आज्ञा होने से सभी मनुष्यों का कर्तव्य हैं कि वह दैनिक यज्ञ किया करें। जो नहीं करते वह ईश्वर की आज्ञा तोड़ने के दोषी होते हैं। प्राचीन काल में सभी लोग यज्ञ किया करते थे। यहां तक कि राम व कृष्ण जी भी यज्ञ किया करते थे। इसके प्रमाण रामायण एवं महाभारत में उपलब्ध होते हैं। यज्ञ क्यों किया जाता है और इससे क्या लाभ होते हैं, इसके लिये महर्षि दयानन्द ने पंचमहायज्ञ विधि में जो कहा है, उसे हम प्रस्तुत करते हैं।

महर्षि दयानन्द लिखते हैं कि अग्नि वा परमेश्वर के लिए, जल, और पवन की शुद्धि, वा ईश्वर की आज्ञा पालन के अर्थ होत्र–जो हवन, अर्थात् दान करते हैं, उसे 'अग्निहोत्र' कहते हैं। केशर, कस्तूरी आदि सुगन्ध, घृत–दुग्ध आदि पुष्ट, गुड़–शर्करा आदि मिष्ट तथा सोमलतादि रोगनाशक औषधि, जो ये चार प्रकार के बुद्धि वृद्धि, बल और आरोग्य करनेवाले गुणों से युक्त पदार्थ हैं, उनका होम करने से पवन और वर्षा–जल की वृद्धि करके शुद्ध पवन और जल के योग से पृथिवी के सब पदार्थों की जो अत्यन्त उत्तमता होती है, उससे सब जीवों को परम सुख होता है। इस कारण उस अग्निहोत्र कर्म करनेवाले मनुष्यों को भी जीवों का उपकार करने से अत्यन्त सुख का लाभ होता है तथा ईश्वर भी उन मनुष्यों पर प्रसन्न होता है। ऐसे–ऐसे प्रयोजनों के अर्थ अग्निहोत्रादि का करना अत्यन्त उचित है।

यज्ञ करने से मनुष्यों को अनेक लाभ होते हैं। ईश्वर की आज्ञा का पालन करने से हम पाप करने से बचते हैं तथा यज्ञ के रूप में जिसे ऋषि दयानन्द ने महायज्ञ कहा है, हम पुण्य के भागी होते है। यज्ञ से वर्षा जल व वायु की शुद्धि होने से मनुष्यों की अनेक प्रकार के साध्य व असाध्य रोगों से रक्षा होती है। वह स्वस्थ रहने से दीर्घायु एवं बलवान होते हैं। रोगरहित, स्वस्थ तथा बलवान मनुष्य अधिक सुखी होता है। सबसे मुख्य लाभ यज्ञ करने से मनुष्यों को मिलता है। मनुष्य का परजन्म भी यज्ञ करने से सुधरता है। यज्ञ ईश्वर वा मोक्ष प्राप्ति में भी अग्निहोत्र यज्ञ सहायक है। यज्ञ से किसी का अपकार नहीं होता अपितु सभी जीवों वा मनुष्य आदि प्राणियों को अनेक प्रकार के लाभ यज्ञ से

कैंसर की जड़

कभी जीवन की संध्या बेला में दस्तक देने वाला कैंसर आज बच्चे, बूढ़े, जवान सभी को अपनी चपेट में ले चुका है। देखा जाए तो कैंसर का सीधा संबंध हरित क्रांति से है। हरित क्रांति के दौर में एकफसली खेती की शुरुआत हुई, जिसमें पशुओं की जगह मशीनों ने लिया तो देसी और हरी खाद की जगह रासायनिक उर्वरकों ने। उदाहरण के लिए हरित क्रांति के अगुआ पंजाब में गेहूं, धान और कपास के रकबे में अभूतपूर्व बढ़ोतरी हुई, लेकिन ज्वार, बाजरा, मक्का, और मूंगफली जैसी फसलें भुला दी गईं। इससे फसल चक्र रुक गया और मिट्टी की उर्वरता तेजी से घटी जिसकी भरपाई रासायनिक उर्वरकों से की जाने लगी।

इससे एक ओर खेती की लागत बढ़ी तो दूसरी ओर किसानों की आमदनी घटी जिससे वे कर्ज के जाल में उलझते चले गए। आगे चल कर यही वाकया पूरे देश में दुहराया गया। इसका नतीजा कैंसर की लहलहाती फसल के रूप में सामने आ रहा है। इसके बावजूद सरकारें कैंसर की जड़ को दूर न कर, कैंसर अस्पताल खोल कर पत्ते से इलाज कर रही हैं।

इसे समझने के लिए हरित क्रांति का पोस्टमार्टम जरूरी है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद संयुक्त राष्ट्र की स्थापना हुई जिससे दुनिया में आपसी टकरावों को बातचीत के जरिए हल करने की प्रक्रिया शुरू हुई। इससे विकसित देशों की गोला–बारूद, रसायन बनाने वाली कंपनियां बेरोजगार हो गईं। अपनी बेकारी दूर करने के लिए उन्होंने रसायन, कीटनाशक, उर्वरक आदि बनाना शुरू कर दिया। चूंकि विकसित देशों में इनकी बिक्री की सीमित संभावनाएं थीं इसलिए उन्होंने तीसरी दुनिया के देशों में हरित क्रांति का शिगूफा छोड़ा। इनके दबाव में आकर संबंधित देशों की सरकारों ने तीसरी दुनिया के देशों के शासनाध्यक्षों को तरह–तरह के प्रलोभन देकर, प्रतिबंध लगा कर और भुखमरी का हौवा दिखा कर हरित क्रांति का मार्ग प्रशस्त किया। जो कीटनाशक और रसायन विकसित देशों में प्रतिबंधित थे उन्हें विकासशील देशों में डंप किया जाने लगा। इसका दुष्प्रभाव मिट्टी, पानी, पशु चारे और अनाजों के माध्यम से मनुष्य और पशुओं के शरीर में भी पहुंचा और वे तरह–तरह की बीमारियों के शिकार होने लगे। चूंकि ये बीमारियां अलग किस्म की थीं इसलिए इनके इलाज के लिए दवा खोजने–बेचने का दायित्व भी विकसित देशों की कंपनियों ने अपने कंधों पर ले लिया।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि हरित क्रांति बहुराष्ट्रीय कंपनियों की कुटिल चाल है। यह आत्मनिर्भर ग्रामीण समाज को पंगु बना कर बहुराष्ट्रीय कंपनियों की तिजोरी भरने का काम करती है। रासायनिक उर्वरक, कीटनाशक, तरह–तरह की बीमारियां और उनके लिए नई–नई दवाइयां आदि इसके सहउत्पाद हैं। इस प्रक्रिया में जीडीपी अवश्य बढ़ती है, लेकिन सेहत का बंटाधार हो जाता है। आज देश के बहुत कम गांव ऐसे होंगे जहां ब्लड शुगर जांचने की सुविधा न हो। यहां बीमारी रोजगार पैदा कर रही है। यही आधुनिक विकास की विडंबना है।

'रमेश कुमार दुबे, मोहन गार्डन, दिल्ली

– जनसत्ता से साभार

जहां नहीं होता कभी विश्राम ॥ ओ३म् ॥ आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

हर राहे गुजर पर शमां जलाना है मेरा काम, हवा का रूख क्या है मैं देखता नहीं...

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् का युवा निर्माण

मातृ पितृ भक्त, ईश्वर भक्त, देशभक्त, चरित्रवान युवा पीढ़ी के निर्माण का अभियान

1. राष्ट्रीय युवक चरित्र निर्माण शिविर

शनिवार 8 जून से रविवार 16 जून 2019 तक

स्थान : ऐमिटी कैम्पस, सेक्टर-44, नोएडा

सम्पर्क: प्रवीन आर्य-9911404423, अरुण आर्य-9818530543

2. दिल्ली आर्य कन्या चरित्र निर्माण शिविर

रविवार 19 मई से रविवार 26 मई 2019 तक

स्थान: गीता भारती पब्लिक स्कूल, अशोक विहार-2, दिल्ली

उर्मिला आर्या-9711161843, राजरानी अग्रवाल-9810304300

3. आगरा आर्य कन्या शिविर

सोमवार 3 जून से रविवार 9 जून 2019 तक

स्थान: कृष्णा इण्टरनेशनल स्कूल, महुआ खेड़ा, आगरा

श्री रमाकान्त सारस्वत-9719003853

4. राजस्थान प्रान्तीय युवक निर्माण शिविर

शुक्रवार 14 जून से वीरवार 20 जून 2019 तक

संस्कार भवन, जी.एल. सैनी कॉलेज, केसर नगर चौराहा, रामपुरा रोड जयपुर

सम्पर्क: यशपाल यश, प्रान्तीय अध्यक्ष-9414360248

5. हरियाणा प्रान्तीय युवक निर्माण शिविर

बुधवार 19 जून से रविवार 23 जून 2019 तक

स्थान: आर्य समाज, सेक्टर-6, करनाल

स्वतन्त्र कुकरेजा-9813041360, अजय आर्य-9416128075, रोशन आर्य-9812020862

6. पलवल युवक निर्माण शिविर

सोमवार 3 जून से रविवार 9 जून 2019 तक

स्थान: आर्य समाज, जवाहर नगर, पलवल, हरियाणा

सम्पर्क: स्वामी श्रद्धानन्द जी-9416267482

7. कैथल युवक निर्माण शिविर

बुधवार 5 जून से बुधवार 12 जून 2019 तक

स्थान: आर्य विद्यापीठ स्कूल, पबनावा, जिला कैथल

सम्पर्क: आचार्य राजेश्वर मुनि-9896960064, कमल आर्य 9068058200

8. राष्ट्रीय शिक्षक अभ्यास शिविर

शुक्रवार 3 मई से रविवार 5 मई 2019 तक

स्थान: गुरुकुल ग्राम खेड़ाखुर्द, दिल्ली-110082

सम्पर्क: सौरभ गुप्ता-9971467978, सूर्यदेव आर्य-9416715537

9. मध्य प्रदेश प्रान्तीय युवक निर्माण शिविर

सोमवार 20 मई से रविवार 26 मई 2019 तक

स्थान: कलोता विद्यापीठ, जलोदा, पंथ, देवालपुर, इन्दौर

सम्पर्क: आ. भानुप्रताप वेदालंकार-09977967777

10. उत्तराखण्ड योग-आयुर्वेद-प्राकृतिक चिकित्सा शिविर

मंगलवार 4 जून से रविवार 9 जून 2019 तक

स्थान : गुरुकुल कण्वाश्रम, कोटद्वार, पौढ़ी गढ़वाल

सम्पर्क: ब्र. विश्वपाल जयन्त-09837162511, संजय रावत-9084724491

11. जम्मू-कश्मीर युवक निर्माण शिविर

सोमवार 17 जून से मंगलवार 25 जून 2019 तक

स्थान : आर्य समाज, जानीपुर, जम्मू

श्री सुभाष बब्बर-09419301915, रमेश खजुरिया-9797384053

12. उड़ीसा युवक निर्माण शिविर

शुक्रवार 10 मई से वीरवार 16 मई 2019 तक

स्थान: वेद व्यास संस्कृत महाविद्यालय, राऊरकेला, उड़ीसा

सम्पर्क : आचार्य धनेश्वर बेहरा-9438441227

13. जयपुर में आर्य कन्या शिविर

शुक्रवार, 10 मई से वीरवार 16 मई 2019 तक

श्री विनायक एजुकेशन कैम्पस, नायला, कानोता, जयपुर

सम्पर्क : श्री प्रमोद पाल-9828014018

14. उत्तराखण्ड युवक निर्माण शिविर

शनिवार, 18 मई से शनिवार 25 मई 2019 तक

स्थान: सैनिक हाई स्कूल, बागेश्वर, उत्तराखण्ड

संरक्षक: गोविन्दसिहं भण्डारी व सुश्री लक्ष्मी टाकुली संयोजक-09412930200

15. यमुना नगर युवा प्रेरणा सम्मेलन

शुक्रवार 28 जून से रविवार 30 जून 2019 तक

स्थान: सत्यार्थ भवन, रादौर, जिला यमुना नगर, हरियाणा

संयोजक: सौरभ आर्य -9813739000

16. फरीदाबाद युवक चरित्र निर्माण शिविर

रविवार 2 जून से रविवार 9 जून 2019 तक

स्थान: सैनी सीनियर सै. स्कूल, भारत कालोनी, फरीदाबाद

संयोजक: जितेन्द्र सिंह आर्य -9210038065, वीरेन्द्र योगाचार्य-9350615369

17. मध्य दिल्ली युवा निर्माण शिविर

मंगलवार 14 मई से बुधवार 22 मई 2019 तक

स्थान: हीरालाल जैन सी.सै.स्कूल, सदर बजार, दिल्ली-6

संयोजक: गोपाल जैन -9810756571, आदर्श आहुजा-9811440502

18. 16वां स्वामी दीक्षानन्द स्मृति दिवस

रविवार 19 मई 2019 प्रातः 9:30 से 1:30 तक

स्थान: वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, नालापानी, देहरादून

संयोजक: दर्शन अग्निहोत्री-9810033799, प्रेमप्रकाश शर्मा-9412051586

अनिल आर्य	महेन्द्र भाई	रामकुमार सिंह	यशोवीर आर्य	गवेन्द्र शास्त्री	धर्मपाल आर्य
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	राष्ट्रीय उपाध्यक्ष	राष्ट्रीय बौद्धिकाध्यक्ष	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष
9868051444	7703922101	9868064422	9312223472	9810884124	9871581398

केन्द्रीय कार्यालय: आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली-110007, फोन-7550568450, 9958889970

Email: aryayouth@gmail.com Website: www.aryayuvakparishad.com Join-http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

!!ओ३म्!!

आर्य राष्ट्र बनायेंगे! युवक क्रांति अभियान

युवकों के लिए स्वर्णिम अवसर

हरियाणा प्रान्तीय आर्य युवक निर्माण शिविर

स्वामी दयानन्द सरस्वती

दिनांक : 1 जून (शनिवार) से 5 जून (बुधवार), 2019 तक

स्थान:स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, ग्राम टिटौली, जिला–रोहतक (हरियाणा)

स्वामी इन्द्रवेश

नौजवान साथियों तैयार हो जाओ

शिविर के मुख्य आकर्षण

- राष्ट्रीय भावना, अनुशासन, नैतिक शिक्षा तथा परोपकार की शिक्षा दी जायेगी।
- योगासन, प्राणायाम, जूडो–कराटे आदि शारीरिक एवं आत्मरक्षा सम्बन्धी प्रशिक्षण दिया जायेगा।
- वैदिक विद्वानों द्वारा संध्या, यज्ञ, आर्य संस्कृति व वैदिक सिद्धान्तों पर व्याख्यान तथा शंका समाधान किया जायेगा।
- व्यक्तित्व विकास, वक्तृत्त्व कला एवं आत्मविश्वास के विकास का प्रशिक्षण दिया जायेगा।
- कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी, धार्मिक अन्धविश्वास व पाखण्ड एवं दहेज आदि सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध जागरूक किया जायेगा।
- भोजन की व्यवस्था पूर्णत: नि:शुल्क रहेगी।

आवश्यक नियम व निर्देश

- शिविरार्थियों की आयु 15 वर्ष से ऊपर होनी चाहिए।
- अनुशासन का पालन आवश्यक होगा।
- कोई भी कीमती सामान व मोबाईल अपने साथ लेकर न आयें।
- ऋतु अनुकूल बिस्तर, टार्च, गणवेश (सफेद सैंडो बनियान, सफेद जूते, सफेद जुराब व लाल रंग का नेकर) व नित्य प्रयोग होने वाला सामान साथ लायें।
- इच्छुक युवक 200 रुपये प्रवेश शुल्क सहित अपना प्रवेश पत्र, अपने माता–पिता/अभिभावक द्वारा अनुमोदित कराकर 30 मई, 2019 तक अवश्य जमा करवायें। स्थान सीमित होने के कारण विलम्ब से आने वाले आवेदन स्वीकृत नहीं होंगे।

दानी महानुभावों से अपील

इस पांच दिवसीय विशाल शिविर के प्रबन्ध एवं भोजन प्रातराश आदि पर लाखों रुपये खर्च होने हैं, आप जैसे दानी महानुभावों के सहयोग से ही इस व्यय की पूर्ति होनी है। अत: आपसे प्रार्थना है कि राष्ट्र निर्माण के इस यज्ञ को सफल बनाने के लिए आप अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग करायें। आप यदि धनराशि के रूप में योगदान देना चाहते हैं तो समस्त क्रास चैक/बैंक ड्राफ्ट 'युवा निर्माण अभियान' के नाम से भिजवाने की कृपा करें। यदि वस्तु रूप में दान देना चाहें तो आप आटा, दाल, चावल, शुद्ध घी, रिफाइंड, दलिया, चीनी, दूध, सब्जी, मसाले आदि सामान भिजवा कर सहयोग कर सकते हैं। आपके द्वारा दिये गये दान से युवक चरित्र निर्माण रूपी पवित्र यज्ञ सफल होगा तथा आप पुण्य के भागी बनेंगे।

आयोजक

युवा निर्माण अभियान, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् एवं स्वामी इन्द्रवेश फाउण्डेशन

कार्यालय : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ टिटौली, रोहतक (हरियाणा), मो.:- 9416630916, 9354840454

पृष्ठ 3 का शेष

वैदिक त्रैतवाद

जैसा कि यजुर्वेद ..... 40/1 में कहा है ''ईशा वास्यमिदं सर्वं यतकिंच जगत्यां जगत्''। अर्थात् ईश्वर सर्वत्र विद्यमान है, नित्य है, ऐश्वर्यशाली है, यह जगत् चलायमान अस्थिर अनित्य है गतिशील है। संसार का प्रत्येक पदार्थ विनाश की ओर जा रहा है। जगत् को जगत् इसलिए कहते हैं कि – ''गच्छतीति जगत्'' जो चल रहा है वह जगत् है, संसरति इति संसार: जो संसरण कर रहा है वह संसार है। जगत् और संसार की अस्थिरता का अतिश्योक्ति रूप से इसे मिथ्या कहकर लोगों को भ्रमित किया है। यथार्थता यह है कि ब्रह्म का भी अस्तित्व है और जगत् का भी अस्तित्व है। अन्तर केवल इतना ही है कि चेतन ब्रह्म नित्य है और प्रकृति से बना हुआ जगत् अनित्य है, किन्तु दोनों ही हैं।

अद्वैतवादियों के समक्ष जब यह प्रश्न उपस्थित किया जाता है कि यदि ब्रह्म एक है तो एक से अनेक कैसे हो गये। इसका उत्तर देते हुए वे कहते हैं कि माया के कारण एक से अनेक हो गये। फिर यदि यह प्रश्न किया जाता है कि माया है द्रव्य या गुण है। यदि माया को द्रव्य अर्थात् पदार्थ मानते हैं तो अद्वैत एक नहीं रहा फिर तो ब्रह्म और माया ये दो हो गये फिर तो द्वित्व अर्थात् द्वैत हो गया और यदि आप इसे गुण कहें तो यह प्रश्न होगा कि ब्रह्म के अतिरिक्त कुछ दूसरा तत्व तो है ही नहीं, फिर यह गुण ब्रह्म का माना जायेगा तो क्या आप यह स्वीकार करेंगे कि माया के कारण ज्ञानी ब्रह्म अज्ञानी हो गया। यह कैसा गुण कि सूर्य जो प्रकाश का भण्डार है उसमें आप अंधेरा है यह सिद्ध करने का दु:साहस कर रहे हैं। क्योंकि माया के कारण ही ब्रह्म अपने को जीव समझता है, और प्रत्येक जीव अपना पृथक्–पृथक् अस्तित्व स्वीकार करता हैं। संसार के विविध पदार्थ माया के कारण ही दिखाई देते हैं। यदि माया को जड़ मानते हों या चेतन मानते हों तो यह प्रश्न उपस्थित होता है। यदि इसे आप जड़ कहते हैं तो बड़ा आश्चर्य है कि जड़ माया का चेतन ब्रह्म पर इतना प्रभाव कि नित्य आनन्द स्वरूप ब्रह्म अपने आपको अज्ञानी, दु:खी मानने लगा और यदि माया को चेतन मानते हैं तो फिर वही समस्या है कि दो चेतन हो जायेंगे। ''एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति'' यह सिद्ध नहीं होगा। ऐसे अनेक प्रश्न अद्वैतवादियों के समक्ष हैं जिनका वे समुचित समाधान नहीं कर पाते हैं।

वस्तुत: माया शब्द का प्रयोग श्वेताश्वेतर उपनिषद् (4/10) में प्रकृति के लिए हुआ है, वहां स्पष्ट ही लिखा है ''मायां तु प्रकृतिं विद्यात् मायाविनं तु महेश्वरम्''। अर्थात् माया को प्रकृति समझो और मायावी को ईश्वर समझो। ब्रह्म और माया से अर्थात् ईश्वर और प्रकृति से सृष्टि की रचना होती है, यह स्पष्ट होता है।

जीव के विषय में अद्वैतवादियों का मत है कि ''जीवो ब्रह्मैव नापर:'' अर्थात् जीव ब्रह्म ही है अन्य नहीं है। इसलिए ''अहं ब्रह्मास्मि'' मैं ब्रह्म हूँ ऐसा उल्लेख उपनिषदों में है यह सिद्ध करते हैं। उदाहरण के द्वारा स्पष्ट करते हैं कि जैसे सूर्य एक है और दस बर्तन में पानी भरकर रखा है तो दस बर्तनों में सूर्य की परछाई दिखाई देती है जैसे कि दस सूर्य हैं, किन्तु वास्तव में सूर्य तो एक ही है। वैसे ही ब्रह्म तो एक ही है किन्तु अन्त:करण में प्रतिबिम्बित होने वाले ब्रह्म को जीव कहा जाता है वस्तुत: वह जीव ब्रह्म ही है। किन्तु इस उदाहरण को देते समय वे भूल जाते हैं कि सूर्य और पानी का बर्तन दोनों एक दूसरे से दूर हैं इसलिए सूर्य की प्रतिच्छाया – (परछाई) पानी में पड़ती है। ब्रह्म तो सर्व व्यापक है उसकी दूरी न होने से परछाई का प्रश्न ही नहीं होता। फिर सूर्य स्थूल भौतिक पदार्थ है। क्या ब्रह्मा भी स्थूल और भौतिक पदार्थ है?फिर अन्त:करण वाला ब्रह्म जिसे जीव कहते हैं, वह अज्ञानी–दु:खी और अन्त:करण रहित ब्रह्म सर्वज्ञ और आनन्द स्वरूप है, इस प्रकार ज्ञानी ब्रह्म को अज्ञानी आनन्द के भण्डार को दु:खी ब्रह्म सिद्ध करते हैं, जिसका भी कोई समाधान नहीं है।

वेदादि शास्त्रों में जीवात्मा को ब्रह्म से पृथक् ही वर्णित किया है, जैसा कि कहा है ..... ''त्यक्तेन भुंजीथा:'' 1140/1।। हे मनुष्य त्याग पूर्वक भोग कर। यदि जीवात्मा का पृथक अस्तित्व स्वीकार नहीं करेंगे तो क्या यह वेद मंत्र ब्रह्म के लिए आदेश देता है कि .... हे ब्रह्म/तू त्याग पूर्वक भोग कर। ब्रह्म तो पूर्ण है उसमे कोई न्यूनता नहीं है। ''रसेन तृप्तो न कुतश्चनोन:''।। अथर्ववेद 10/8/44 में ऐसा कहा है। वेदान्त दर्शन के प्रारम्भ में ही ''अथातो ब्रह्म जिज्ञासा'' कहा है अर्थात् मैं ब्रह्म को जानने की इच्छा करता हूँ। यह इच्छा जीवात्मा ही कर सकता है। यदि जीवात्मा का अस्तित्व न मानेंगे तो क्या यह कहेंगे कि ब्रह्म, ब्रह्म को जानने की इच्छा करता है। ऐसा कहने वाला उपहास का ही पात्र होगा। अत: ईश्वर जीव और प्रकृति के इस ''त्रैतवाद'' के सिद्धान्त को स्वीकार करना चाहिए, जो वेदानुकूल है।

– 309, मिल्टन अपार्टमेंट, जुहू कोलिवाडा, मुम्बई

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

संस्कृता स्त्री पराशक्ति !!ओ३म्!! संस्कारवान स्त्री परमशक्ति है

कन्याओं एवं युवतियों के लिए स्वर्णिम अवसर

राष्ट्रीय कन्या चरित्र निर्माण एवं योग शिविर

स्वामी दयानन्द सरस्वती

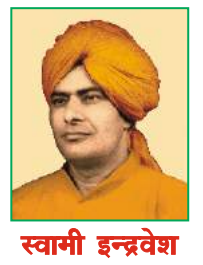

स्वामी इन्द्रवेश

दिनांक : 6 जून (वीरवार) से 12 जून (बुधवार), 2019 तक
स्थान:स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, ग्राम टिटौली, जिला–रोहतक (हरियाणा)

पाँच सौ कन्याएँ एवं युवतियाँ भाग लेंगी

शिविर के मुख्य आकर्षण

- राष्ट्रीय भावना, अनुशासन, नैतिक शिक्षा तथा परोपकार की शिक्षा दी जायेगी।
- योगासन, प्राणायाम, जूडो–कराटे आदि शारीरिक एवं आत्मरक्षा सम्बन्धी प्रशिक्षण दिया जायेगा।
- वैदिक विद्वानों व विदुषियों द्वारा संध्या, यज्ञ, आर्य संस्कृति व वैदिक सिद्धान्तों पर व्याख्यान तथा शंका समाधान किया जायेगा।
- चर्चित महिलाओं द्वारा जीवन में सफलता के गुर सिखाए जायेंगे।
- व्यक्तित्व विकास, वक्तृत्व कला एवं आत्म विश्वास के विकास का प्रशिक्षण दिया जायेगा।
- कन्या भ्रूण हत्या, दहेज आदि सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध जागरूक किया जायेगा।
- भोजन की व्यवस्था पूर्णत: नि:शुल्क रहेगी।

आवश्यक नियम व निर्देश

- शिविरार्थियों की आयु 15 वर्ष से ऊपर होनी चाहिए।
- अनुशासन का पालन आवश्यक होगा।
- कोई भी कीमती सामान व मोबाईल अपने साथ लेकर न आयें।
- ऋतु अनुकूल बिस्तर, टार्च, गणवेश (सफेद सैंडो बनियान, सफेद जूते व सफेद जुराब) व नित्य प्रयोग होने वाला सामान साथ लायें।
- इच्छुक युवक 100 रुपये प्रवेश शुल्क सहित अपना प्रवेश पत्र, अपने माता–पिता/अभिभावक द्वारा अनुमोदित कराकर 30 मई, 2019 तक अवश्य जमा करवायें। स्थान सीमित होने के कारण विलम्ब से आने वाले आवेदन स्वीकृत नहीं होंगे।

दानी महानुभावों से अपील

इस पांच दिवसीय विशाल शिविर के प्रबन्ध एवं भोजन प्रातराश आदि पर लाखों रुपये खर्च होने हैं, आप जैसे दानी महानुभावों के सहयोग से ही इस व्यय की पूर्ति होनी है। अत: आपसे प्रार्थना है कि राष्ट्र निर्माण के इस यज्ञ को सफल बनाने के लिए आप अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग करायें। आप यदि धनराशि के रूप में योगदान देना चाहते हैं तो समस्त क्रास चैक/बैंक ड्राफ्ट 'युवा निर्माण अभियान' के नाम से भिजवाने की कृपा करें। यदि वस्तु रूप में दान देना चाहें तो आप आटा, दाल, चावल, शुद्ध घी, रिफाइंड, दलिया, चीनी, दूध, सब्जी, मसाले आदि सामान भिजवा कर सहयोग कर सकते हैं। आपके द्वारा दिये गये दान से युवक चरित्र निर्माण रूपी पवित्र यज्ञ सफल होगा तथा आप पुण्य के भागी बनेंगे।

आयोजक

युवा निर्माण अभियान, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् एवं स्वामी इन्द्रवेश फाउण्डेशन

कार्यालय : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ टिटौली, रोहतक (हरियाणा), मो.:– 9416630916, 9354840454

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।